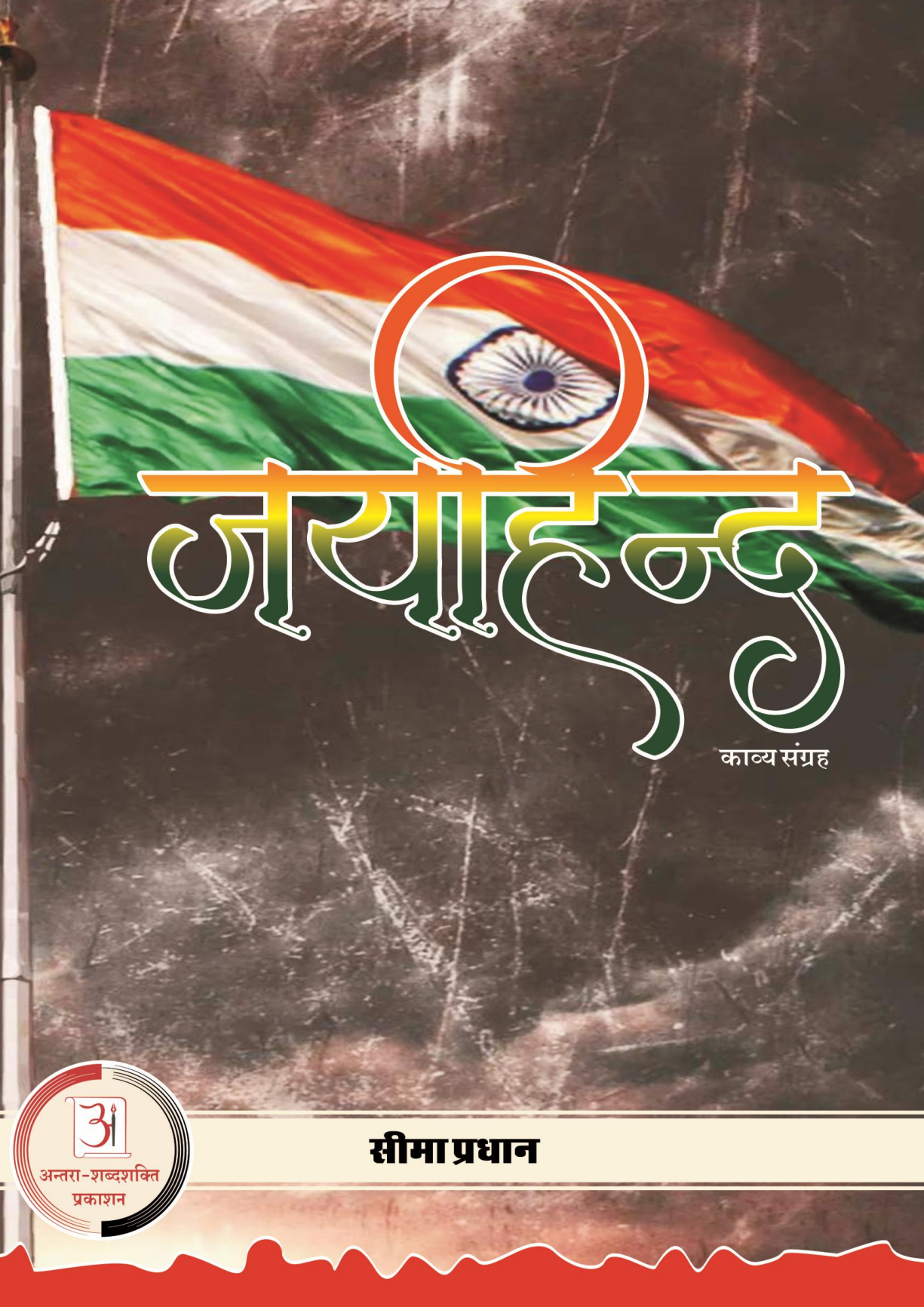

सीमा प्रधान

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

जयहिन्द

काव्य संग्रह

सीमा प्रधान

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - "978-93-5372-073-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **सीमा प्रधान**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

JAIHIND BY SEEMA PRADHAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

१	उठो देश के जवां	५
२	दीप बुझा कर	६
३	नगमें तरानें	७
४	कैसा शोर बरपा है	८-९
५	सूरज का अवसान हुआ	१०-११
६	कैसे प्रेम का गीत लिखूं मैं	१२
७	भारत भूमि	१३
८	नगमें तराने	१४
९	सैनिक जीवन	१५-१७
१०	शाने हिन्दुस्तान	१८-२०
११	मुझे भारत की धरती पर	२१-२२
१२	आजादी	२३
१३	मुक्तक	२४-३२

उठो देश के जवां

उठो देश के जवां छुओ अम्बर को मत संकोच करो
अपने मन मे स्फूर्ति नई अरमान नया नव जोश भरो
अलसाये कदमो से तुम अम्बर को न छू पाओगे
सीमा कर प्रहरी जाग उठो जगजननी का तुम शोक हरो

कर्मवीर हो तुम्ही-तुम्ही इतिहास रचने बाले हो
तुम वीरों के वंसज हो जगजननी के रखबाले हो
अपने अनुकूल समय कर लो खुद रचो हाथ की रेखाएं
तुम्हे भाग्य करे न संचालित तुम स्वयं उसे आदेश करो

कदमो के नीचे करो जमी हाथों से चांद मसल डालो
गर तुम चाहो तो पल छिन में नदियां ओर सागर मथ डालो
दुश्मन की कुछ औकात नही वो चुटकी में मिट जाएगा
जहां चंदन वृक्ष उगाने है, वो धरती तो तैयार करो

चलने को हो तैयार तुम्हारे साथ जमाना चल देगा
तुमको बल, संयम, ओज तेज आने वाला हर पल देगा
निर्बल को बल सच को सम्बल देना ही लक्ष्य तुमारा है
तुम नव युग की संतान जगो परतंत्रता मत स्वीकार करो

दीप बुझा कर

कोई तो है जो दीप बुझा कर अंधेरा कर देता है
कोई तो है जो बच्चो के दिल पर खंजर धर देता है
जब जब लिखनी चाही मेने प्रेम युक्त कोमल कविता
व मेरे गीतों में तब तब अंगारे भर देता है

सुख सम्रधी मेरे देश मे लेती है जब अंगड़ाई
अखण्डता पर आने लगती है जब थोड़ी तरुडाई
दुश्मन ठीक उसी पल आतंकी प्रहार कर देता है
तब वक्त मेरे गीतों..

दुश्मन शायद जादूगर है झोखा बनकर आता है
सेना के मुख्यालय से सीक्रेट चुरा ले जाता है
जब कोई गद्दार देश को दागदार कर देता है
तब वो वक्त मेरे गीतों...

जवा लहू बहता सरहद पर जब भारत के लालो का
चीत्कार करता है कण कण दर्द देख मतबालो का
धवल तिरंगे को जब कोई शोगवार कर देता है
तब वो वक्त मेरे गीतों में....

नगमे तराने

अब हम से तू न नगमे तराने की बात कर
न हुस्न को फूलों से सजाने की बात कर
कुछ लोग चाहते है तिरंगे को नोंचना
कर सकता है तो मुल्क बचाने की बात कर

बारूद के एक ढेर पर बैठे हुए है लोग
न जाने किस गुमान में एठे हुए है लोग
ये कैसा दौर है के कयामत को छू गया
गुजरा जमाना ढूढ़ कर लाने की बात कर

इंसान ही इंसान से टकराने लगा है
अपने घरों पे गोलियां बरसाने लगा है
जो बुझ गए दीप अमनो अमान के
आ फिर बही चिराग जलाने की बात कर

तू भारती का लाल है क्यूं हो रहा बिकल
तेरी भुजाओं में भरा सौ हाथियों का बल
धरती से तो सोना उगा लेता है हर कोई
तू रेत से मोती उगा लाने की बात कर।

कैसा शोर बरपा है

ये कैसा शोर बरपा है ये चीखा कौन करता है
कि अपने देश में खूनो खराबा कौन करता है

थके है वीर भारत के तो मेरे खोल दो बन्धन
मुझे तलवार दे दो हाथ में वापस रखो कंगन
जरा देखूं तो फौलादी है किस मगरूर का सीना
हमारे तीर सह लेने का दावा कौन करता है

अभी भूली नहीं दुनिया वो हिंदुस्तान का किस्सा
वो तेवर सूरमाओं के दिलो में जोश और गुस्सा
हुई है राख भी ठंडी नहीं अब तक सपूतों की
फिर हमसे लोहा लेने का इरादा कौन करता है

लड़ाके हम भी हैं खूंखार हैं जांबाज हैं सुन लो
चलो सिक्का उछालो इक दफा फिर जंग को चुन लो
तुम्हारे सौ हमारे दो जवान गिन लेना लाशों को
समर में कत्ल दुश्मन के जियादा कौन करता है

जमाना जानता है दोगली नीयत तुम्हारी है
मगर हमसे तुम्हारी आज तक हर चाल हारी है
अगर जो तुम नहीं हो तो बताओ कौन है आखिर
वहाँ दिन रात सरहद पर वबाला कौन करता है

तुम्हें इक मशवरा देते हैं जो चाहो तो ले लो तुम
तरक्की मुल्क की देखो न बारूदों से खेलो तुम
सिखाओ प्यार नस्लों को बढ़ाओ अम्न दुनिया में
अगर हो पेट खाली तो दिखावा कौन करता है

सदा तुम दूसरों के घर जला देने में माहिर हो
जहां भर में हवा दहशत की फैलाने में माहिर हो
तुम्हारी चाल है मौकापरस्ती की हमेशा से
तमाशेबाज हो, तुम सा तमाशा कौन करता है

हो तुम दंगे की पैदाइश तुम्हें पहचानते हैं सब
न जाने फिर भी चुप क्यों हैं तुम्हें जब जानते हैं सब
जिगर वाले हैं हम हमको नहीं है खौफ खुद देखो
भरी महफिल तुम्हारा यों खुलासा कौन करता है !

सूरज का अवसान हुआ

एक सूरज का अवसान हुआ
विधना का कुटिल विधान हुआ
इतिहास के भाल पे लिखा अटल
दुनियां भर में गुणगान हुआ

एक युग को अपने साथ लिए
चल दिये एक इतिहास लिए
जिस शान से जीवन किया पूर्ण
उस शान से ही अवसान हुआ

वाणी में शारदे का निवास
मस्तक पर था यश का प्रकाश
पूरा भारत परिवार बना
जन जन के हृदय निवास हुआ

न दुःखी कभी न उल्लासित
पूरा जीवन था अनुशासित
खुद की मस्ती में मस्त रहे
हर इक मौसम मदुमास हुआ

पद का कोई अभिमान नही
स्वार्थ का नामोनिशांन नही
सन्यासी जीवन जिया सदा
छल दम्भ द्वैष का नाश हुआ

यम से भी लम्बा युद्ध रहा
लेकिन अंतरमन शुद्ध रहा
लम्बा एक जीवन काल रहा
फिर कालबली का ग्रास हुआ

कैसे प्रेम का गीत लिखू मैं

कैसे प्रेम का गीत लिखू मैं
हार को कैसे जीत लिखूं मैं
बरस रहे अंगार जमी पर कैसे मौसम सीत लिखूं मैं

बस्ती बस्ती कोलाहल है दिशा दिशा हो गई विहल है
आतंकी विषधर फुंकार भारत माँ की आंख सजल है
तुम्ही बताओ करुदाक्रन्दन को कैसे संगीत लिखू मैं
बरस रहे अंगार...

दसो दिशाएं चीख रही है
मस्जिद और शिवाला जलता
इतना बड़ा नही मेरा मन जो बैरी को मीत लिखूं मैं
बरस रहे अंगार.....

जिधर समय का सूर्य निकलता साहित्यकार उधर ही चलता
जैसी किरणे पड़े जमी पर साहित्य का गुल वैसा खिलता
आग उगलती कलम स्वतः ही कैसे उल्टी नीत लिखूं मैं
बरस रहे अंगार.....

भारत भूमि

भारत भूमि पर जन्मी मैं अपना भाग्य सराहती हुँ
नील गगन में उड़े तिरंगा देख देख हरसाती हूं
लेकिन जब लाचार हुकूमत होती गुंडागर्दी से
तब मैं अपने हिन्दुस्ता पर गर्व नही कर पाती हूँ

अब सपूत मां बहनों की इज्जत से खेला करते है
धवल तिरंगे को अपने कृत्यों से मैला करते है
जब भारत के ससंस्कार अपमानित होते पाती हूँ
तब मैं अपने हिदुस्ता पर गर्व नही कर पाती हूँ

चेहरों के अनुरूप न्याय के मानक बदले जाते है
स्वार्थ के अनुकूल सफर में चालक बदले जाते है
जब मैं दो दो मुंह बाले मानब कुर्सी पर पाती हूँ
तब मैं अपने हिदुस्ता पर गर्व नही कर पाती हूँ

खींच लिया जननी का आँचल टुकड़े टुकड़े बेच दिया
लात मार दी उसी कोख को जिस छाती से दुध पिया
मानबता के हत्यारे जब जब खादी में पाती हूँ
तब में अपने....

नगमे तराने

अब हम से तू न नगमे तराने की बात कर
न हुस्न को फूलों से सजाने की बात कर
कुछ लोग चाहते है तिरंगे को नोंचना
कर सकता है तो मुल्क बचाने की बात कर

बारूद के एक ढेर पर बैठे हुए है लोग
न जाने किस गुमान में एठे हुए है लोग
ये कैसा दौर है के कयामत को छू गया
गुजरा जमाना ढूढ़ कर लाने की बात कर

इंसान ही इंसान से टकराने लगा है
अपने घरों पे गोलियां बरसाने लगा है
जो बुझ गए दीप अमनो अमान के
आ फिर वही चिराग जलाने की बात कर

तू भारती का लाल है क्यूं हो रहा विकल
तेरी भुजाओं में भरा सौ हाथियों का बल
धरती से तो सोना उगा लेता है हर कोई
तू रेत से मोती उगा लाने की बात कर।

सैनिक जीवन

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण टोली में वीर जवान चले
सर कफन बाँध कर दीवाने अपने सीनो को तान चले
रणचंडी उनके साथ चली संग महाकाल भगवान चले
मंदिर से चली प्राथनाएं मस्जिद से साथ अजान चले
वीरो की गौरव गाथा का कर सका नहीं कोई बखान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्व विजय भारत महान

२१ बरस का एक जवान जब घर से हुआ रवाना था
संकट में थी भारत माता उसको तो बेशक जाना था
बहना ने थाल सजा कर के माथे पर तिलक लगाया था
दी लाख दुआएं माता ने और फिर फिर गले लगाया था
एक ख्वाव चला उम्मीद चली विश्वास चला एक आस चली
थम गई धड़कने सीने में जियू सारे घर की सांस चली
अपने घर कुलदीपक था और था पूरे घर की वो जान
इस अखिल विश्व में धरती पर ताहि विश्व विजय भारत महान

भारत माँ की रक्षा करने तब वो सरहद पर दौड़ गया
डबडबी आँख निज माता की घर की चौखट पर छोड़ गया
डट गया तुरत वो नाके पर बैरी को धूल चटाता था
सौ-सौ पर था भारी इकला दुश्मन के होश उड़ाता था
पट गई धरा नर मुंडो से झुंडों को मार गिराता था
ललकार रहा था दुश्मन को अंगारे से बरसाता था
इतिहास नया रच देते है ये है हिंदुस्तानी जवान
अखिल विश्व में धरती पर है विश्व विजय भारत महान

बैरी के तंबू उड़ा दिए इस कदर कहर बरपाता था
वो इकला दोनों हाथों से दो दो बंदूक चलाता था
था बुरी तरह जख्मी शरीर पर तनिक नहीं घबराता था
धरती को लहू से सींचा रहा आगे ही बढता जाता था
होठो पर नाच राहा केवल जनगणमन अपना राट्र गान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्व विजय भारत महान

नियति को था मंजूर नहीं उसका जीवित वापस जाना
रच दिया काल ने उसी रोज निर्दयता से तानाबाना
सन्नाती आई तेजी से बिजली सी गोली कौद गई
उस वीर सिपाही का सीना हाय अंदर तक भेद गई
हो गया शहीद अमर जग में लड़ते लड़ते दे गया जान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्व विजय भारत महान

स्तबध हुआ सारा आलम सारा भूमण्डल डोल गया
थम गया समय उस वक्त बही हर दिल में करुणा घोल गया
धरती थर्राई ममता से अम्बर भी रोता दिख पड़ा
सागर भी उछल गया मीलो उस वक्त हिमालय चीख पड़ा
गमगीन हुआ पूरा भारत करता था अपने अश्रु दान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्व गुरु भारत महान

निर्विघन किया भारत माँ को दुश्मन को आज पछाड़ दिया
न नाम निशाँ रहा बाकी घर में घुस का संहार किया
फिर विजय दिवस की भोर हुई दुनियां को नया प्रमाण दिया
दुश्मन की छाती पर जाकर फिर धवल तिरंगा गढ़ दिया
जब जब ललकारा दुश्मन ने तब मिटा दिया नामो निशान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्व विजय भारत महान

हो गया बन्द अध्याय वही थम गई निरन्तरता घर की
सहना ही पड़ता है सबको जैसी मर्जी ही ईश्वर की
फिर ओढ़ तिरंगा कफन चला वो पंच तत्व में लीन हुआ
फिर धीरे धीरे सब समाज निज कार्यो में तल्लीन हुआ
कुछ चेक दिए सरकारों ने परिवार का साथी को हुआ
छप गया शोक अखबारों में और ५ मिनट का मौन हुआ
है यही कहानी सैनिक की हंसते हंसते दे गया जान
इस अखिल विश्व में धरती पर है विश्वविजयी भारत महान

शाने हिंदुस्तान

जिनका सूरज सुबह निकलता है संगीनों की छाव में
जिनके सपने लोरी गाते ही बारूदों के गाँव में
नींद नहीं आती है जिनको ठंडी मस्त हवाओ में
बूट कसे रहते है जिनके रातो को भी पाँव में
उन धरती पुत्रो को लिख दू भार का अभिमान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को में शाने हिंदुस्तान लिखूं

भारत माँ की हर सरहद पर नाहर से गरजा करते हैं
अरि झुंडों पर वो ही सपूत मृत्यु बन बरसा करते हैं
दुश्मन से लोहा लेने को जिनके भुजदण्ड फड़कते हैं
जिनके सीनो में मातृभूमि के हित अंगार भड़कते हैं
दुनिया में सबसे पावन क्यूं न उनका ईमान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को में हिन्दुस्तां की शान लिखूं

माँ धरती करती विजय तिलक, मस्तक को चूमा करती हैं
सूरज देता है बल पुरुष और पवन बेग तब भरती हैं
झुक झुक कर करती अभिनन्दन यह दसो दिशाएं वीरो का
अम्बर गर्जन हुंकारों में गतिशीलता दामिन भरती हैं
पूरी सृष्टि में भारत का में तब पहला स्थान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को में शाने हिंदुस्तान लिखूं

हाथों में लिए तिरंगा ध्वज वीरो की चलती है टोली
चतुरँगिनी सेना निकल पड़ी जय इंकलाब की है बोली
अशफाक, भगत, शेखर सुभाष न मरे हैं न मर पाते हैं
वो फिर-फिर वापस आते है सीने पर खाने को गोली
वीरो की यश गाथाओं पर है कलम मेरी कुर्वान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को मैं शाने हिंदुस्तान लिखूं

मां जगजननी का भाल मुकुट जो देख देख हरसाते हैं
जब प्राणों से करते पूजन तो काल स्वयं थर्राते हैं
वो निज सोणित से माता के माथे पर तिलक सजाते हैं
सरहद पर सिंहनाद करते तब महाकाल थर्राते हैं
उन सूर्य पुत्रों को कियु न मै विधाता का वरदान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को में हिंदुस्तान की शान लिखूं

वो रौद रहे है ग्लेशियर हिमगिरि पिघलाये देते है
आकाश उछल कर छू लेते, सूरज का चुम्बन लेते है
वन ,पर्वत धरती आसमान उनको नतमस्तक होते है
जो अपने सीने खोल खोल कर अंगारों पर लेटे है
मन नहीं मेरा भरता है कभी मई कितना चाहे बखान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को में शाने हिंदुस्तान लिखूं

क्या प्राणों का है मोल कहीं जीवन बेचा जा सकता है
क्या चंद सिक्कों की एवज में कही सर बेचा जा सकता है
पैसे देती सरकारे पर कोई सर की कीमत क्या देगा
यह देश प्रेम का जज्बा है, कोई इसकी कीमत क्या देगा
सीने पर गोली खाता है उस जज्बे का सम्मान लिखूं
ऐसे वीर सपूतों को मार शाने हिंदुस्तान लिखूं

मुझे भारत की धरती पर

मुझे भारत की धरती पर जन्म सौ बार देना मां
जिगर में जोश बाहों में भी बल भंडार देना मां
उतारू बैरियो के सर बचे न एक भी बाकी
मेरे हाथों में लक्ष्मीबाई सी तलवार देना मां

रहूँ मैं निर्जनों में भी तो मुझ को गम नहीं होगा
ये मेरा जोश और तेवर जरा भी कम नहीं होगा
लगाऊँ जान की बाजी अकेली सरहदों पर मैं
जिसे परिवार चहिए हो उसे परिवार देना मां
मुझे भारत की धरती पर....

बनूं मैं मौत का तूफां दुश्मनों में बिखर जाऊं
मैं बिजली बन के चमकूं और अरि झुंडों पे गिर जाऊं
कोई भी नाम हो मेरा मगर मकसद हो आजादी
मेरी ललकार में अंगारों की बौछार देना मां
मुझे भारत की धरती पर.....

मैं खेमे बैरियों के फूंक दूं शोला बना दे मां
मेरी आँखों को एक जलता हुआ गोला बना दे मां
कलेजे कांप जाए दुश्मनों के नाम से मेरे
मुझे एक सिंहनी जैसी प्रवल हुंकार देना मां
मुझे भारत की धरती पर.....

जनूं मैं लाल ऐसे जो बढ़ाए मान धरती का
कटाये शीश धरती पर बढ़े सम्मान धरती का
निपूती मैं रहूं बेशक तो मुझ को गम नही होगा
मगर मत कोख को मेरी कोई गद्दार देना मां
मुझे भारत की धरती पर.....

मुझे जब मौत आये तो तिरंगा ओढ़ कर जाऊं
सलामत हँसता गाता भारती को छोड़ कर जाऊं
मैं देखूं या न देखूं वो बहारों के हसीं मंजर
मुझे मेरी मौत के बदले यही उपहार देना मां
मुझे भारत की धरती पर.....

आजादी

तुम मुझे खून दो मैं दे दूँगा आजादी तुम्हें
नेता जी के ऐसे उद्घोष को प्रणाम है

झूम-झूम फांसियों को चूम-चूम झूल गए
क्रांतिकारियों ऐसे जोश को प्रणाम है

इंकलाब जिंदाबाद कह के कटाये शीश
अमर सिपाहियों के रोश को प्रणाम है

सत्ता की घिनोनी चाल जिनको निगल गई
नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को प्रणाम है

मुक्तक

(१)

परिस्थिति में ढली नारी है क्या जो कर नहीं देती
जहां कर्तव्य हो ममत्त्व को अवसर नहीं देती
अगर कर्तव्य पति का पुत्र से ज्यादा नहीं होता
तो जोधा हाथ से तलवार अकबर को नहीं देती

(२)

मुझे सौगन्ध है गौरव तेरा खोने नहीं दूँगी
किसी को बीज अब अलगाव का बोने नही दूँगी
सफल होगी न कोई चाल फिर नापाक जहनों की
चमन के बागवानों को मैं अब सोने नही दूँगी

(३)

खबर रखती है पल पल की ये धरती घूम लेती हैं
तिरंगा देख कर नभ में खुशी से झूम लेती है
छटा कर धूल बैरी को जो घर आते है दीवाने
ये धरती गर्व से बेटों के मस्तक चूम लेती है

(४)

मैं अपनी लेखनी को हिन्द पर कुर्बान करती हूं
मैं एक एक शब्द से मां धरती का गुणगान करती हूं
मुझे नफरत नही सिखलाई है मेरे बुजुर्गों ने
मैं हिन्दुतानी हूं हर धर्म का सम्मान करती हूं

(५)

सपूतों की चिंताओं से बनी लो आरती निकली
विजय के अश्व पर चढ़कर गरजती भारती निकली
जहां पर गिर गया था रक्त धरती पर सपूतों का
वहीं से फट गई धरती वहीं भागीरथी निकली

(६)

इन आँखों मे तिरंगे के लिए सम्मान बसता है
मेरी जिभ्या पे भारत माँ का ही गुणगान बसता हैं
मेरी सांसो में खुश्बू हिन्द की धड़कन में धरती माँ
मेरे खूं के हर एक कतरे में हिंदुस्तान बसता है

(७)

मां के आशीषों से पूजित अनी लगी है तीरों पर
है भुजबल पर विस्वास हमे नही जीते भाग्य लकीरों पर
हार जीत की चिंता होती होगी कमजोरों के मन
लिख देते है विजय युद्ध से पहले ही शमशीरों पर

(८)

के नफरत के पुजारी है अमन को बेच देते हैं
कली को बेंच देते है सुमन को बेच देते हैं
ये मूर्दों के शरीरों से कफन को बेचने वाले
कसम खा कर सपूतों की वतन को बेच देते हैं

(९)

लगा कर आग नफरत की अमन की बात करते हैं
कली को बेचने वाले चमन की बात करते हैं
मोहल्ले तक नही मालूम जिनको अपने शहरों के
बना कर मंच उचे वो वतन की बात करते हैं

(१०)

दीवाने यों चले की कोई सिंह चल पड़ा
मैखाने के रस्ते पे कोई रिन्द चल पड़ा
आंखों में उनके भय था न कदमो में थकावट
एक पल को यूँ लगा के सारा हिन्द चल पड़ा

(११)

छातियां चीर कर बारूद से भर दो उनकी
मौत भी मांगे पनाह ऐसी सजा हो उनकी
उनके कदमों तले अंगार बिछाए जाएं
हमारे हिन्द पर नीयत खराब है जिनकी

(१२)

चरित्र जिसका रहा उत्तम उसी ने नाम कर डाला
वो छल से ले गया सीता घृणित ये काम कर डाला
छुआ तक न परम पावन पुनीता सीता माता को
असुर कहने को था रावण मगर किरदार था आला

(१३)

मां भारती के चरणों मे गर्दन उछाल दूं
मैं देश प्रेमियों के लहू को उवाल दूं
सौगन्ध तिरंगे की मैं बेटी हूँ हिन्द की
मैं रेत के सीने से समंदर निकाल दूं

(१४)

मेरी कविता कभी मंचों की दासी हो नहीं सकती
ये खुद ही तृप्त है इतनी ये प्यासी हो नहीं सकती
मैं शब्दों के मुकुट माँ भारती के सर सजाती हूँ
ये शास्वत राष्ट्र वंदन है सियासी हो नही सकती

(१५)

परिस्थिति में ढली नारी है क्या जो कर नहीं देती
जहां कर्तव्य हो ममत्त्व को अवसर नहीं देती
अगर कर्तव्य पति का पुत्र से ज्यादा नहीं होता
तो जोधा हाथ से तलवार अकबर को नहीं देती

(१६)

लगा कर जाँन की बाजी जिन्होनें की हिफाजत है
उन्ही के गीत गूँजेगे वतन जिनकी बदौलत है
वतन वालो कसम खाओ न इसकी शान कम होगी
तिरंगा हिन्द के लाखों शहीदों की अमानत है

(१७)

तटबन्धों में बांधे लेकिन स्वछंद बनाये बच्चो को
ये फूल तो है खुद ही आओ मकरन्द बनाएं बच्चो को
पौरुष ब्रह्मचर्य पराक्रम की चर्चाएं घर में किया करे
अभिभाक खुद चाणक्य विवेकानन्द बनाये बच्चो को

(१८)

कदाचित स्वार्थ हित दुश्मन से यारी कर नही सकती
में कवि के धर्म से बेशक गद्दारी कर नही सकती
मेरा महबूब है मेरा वतन उसकी दीवानी हूँ
मैं बिकने के लिए लहजा बाजारी कर नही सकती

(१९)

गंगा जमुनी होती है बरसात हमारी आंखों से
छलक रहे है भजन मनकबत नात हमारी आंखों से
हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सारा हिन्द हमारा है
दुनिया वाले पूछ रहे है जात हमारी आँखों से

(२०)

गंगा स्नान कर लेने से पापी तर नहीं जाते
किसी के भाग्य तक सदकर्म खुद चलकर नहीं जाते
है अतुलित मां की ममता तो पिता को कम नहीं आंको
बिछोहा राम से होते ही दशरथ मार नहीं जाते

(२१)

आग से खेलोगे तो हाथ जला बैठोगे
तुम हो नादान क्यूं शोलों को हवा देते हो
हमसे टकराया जो वो लौट के वापस न गया
जितने भी आते हो सब जान गंवा देते हो

(२२)

मैं अपनी लेखनी को हिन्द पर कुर्बान करती हूं
मैं एक एक शब्द से मां धरती का गुणगान करती हूं
मुझे नफरत नहीं सिखलाई है मेरे बुजुर्गों ने
मैं हिन्दुतानी हूं हर धर्म का सम्मान करती हूं

(२३)

समय हो अन्त मुख पे राम आ जाये तो क्या कहना
जवानी जो वतन के काम आ जाये तो क्या कहना
बड़ी मुश्किल से मिलता है ये दुर्लभ जन्म मानव का
शहीदों में मेरा भी नाम आ जाये तो क्या कहना

(२४)

दीवाने यों चले की कोई सिंह चल पड़ा
मैखाने के रस्ते पे कोई रिन्द चल पड़ा
आंखों में उनके भय था न कदमो में थकावट
एक पल को यूँ लगा के सारा हिन्द चल पड़ा

(२५)

मोहब्बत में बिखर जाने को यह जीवन नही पाया
प्यार में जान दे देने को यह जीवन नही पाया
पिता माँ से भी पहले जन्मभूमि की धरोहर है
संकल्पों से मुकर जाने को ये जीवन नहीं पाया

(२६)

सुसंस्कृत संस्कारो से हुई अर्जित जवानी हो
कदाचित दम्भ स्वार्थ से रही वर्जित जवानी हो
जवानी में जिन्होंने जान दे दी मुल्क की खातिर
भगत अशफाक बिस्मिल सी वही चर्चित जवानी हो

(२७)

इंकलावी फिर ७१ की कहानी चाहिए
बोष विस्मिल सी बही उठती जवानी चाहिए
जा धंसे पाताल में पंखों सहित बहरूपिये
इस धरा पर फिर फरिश्ता आसमानी चाहिए

(२८)

नचाती है जो इंसा को उसे तकदीर कहते हैं
जो सीना चीयर देती है उसे शमशीर कहते हैं
जो ऊंची बात करते है वो बड़बोले कहते हैं
वतन पर जान देते है उन्ही को वीर कहते हैं

(२९)

इंसान आदमी को बनाने की पहल हो
हर दिल में देश प्रेम जगाने की पहल हो
हो दुर्जनों की भीड़ में सज्जन भी कुछ न कुछ
धरती पे सन्तुलन को बनाने की पहल हो

(३०)

डटे थे सामने दोनों स्थिति भी थी प्रलयंकर
वो ऐसी चीज थी बांटी न जा सकती थी समांतर
बचानी सृष्टि थी सारी धरा का भार था उन पर
दिया अमरत्व देवों को हलाहल पी गए शंकर

(३१)

मेरी आवाज से जागेंगे हिन्द के बासी
इसी उम्मीद को सीने में पाल रख्खा है
आंधियां नफरतों की तेज है तो होने दो
हमने सौहार्द का एक दीप बाल रख्खा है

(३२)

रण में जोहर दिखलाने को आतुर रणवीर तुम्हीं हो
होता अचूक हर बार विष बुझे तीखे तीर तुम्हीं हो
सर काट चीर कर वक्षस्थल दुश्मन का लहू पीने को
बिजली सी कौंध रही चम चम पैनी शमशीर तुम्हीं हो

(३३)

सरहदों पर खड़े चट्टान बन कर के हंमी तो हैं
खड़े बारूद के ढ़ेरों पे चढ़कर के हमी तो हैं
हिफाजत मुल्क की करने को शेरों से टहलते हैं
चले आये हैं सब अरमां दफन कर के हमी तो हैं

(३४)

कयामत आई तो उस से मिलेंगे खुशदिली से हम
खड़े हैं मौत के आगे भी इस दरियादिली से हम
नहीं हैं खोफ मरने का वतन के वास्ते है जां
जिये जिंदादिली से जाएंगे जिंदादिली से हम

(३५)

हमारे हिन्द की मिट्टी में ऐसे वीर पलते हैं
सुदर्शन विष्णु का अर्जुन के तीखे तीर पलते हैं
मिटाते दुश्मनों ओर दानवों का नाम धरती से
शिवा राणा के वंशज है यही रणवीर पलते हैं

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सीमा प्रधान

जन्मतिथि - १६ जून १९७२

शिक्षा - स्नातक

पता - २५ विश्वनाथ पुरम कॉलोनी बदायूं रोड बरेली

ईमेल -

मो. - ९५५७७१६०७५ -९९९७५६४६६९

प्रकाशन - चलै चमन की ओर (विकलांग वर्ग को समर्पित)

सम्मान - अमर उजाला द्वारा स्मार्ट श्रीमती पुरुस्कार, दैनिक जागरण द्वारा स्त्री सम्मान, ग्रह सहेली लेटेक्स कंपनी द्वारा यूपी नंबर १ पुरुस्कार, रास्ट्रीय दृष्टिहीन संघ नई दिल्ली द्वारा सम्मान,मातृभूमि सम्मान रामपुर, चित्रांश गौरव बिसौली बदायूं, विशेष सम्मान खंडवा (म.प्र.), ग्रेट आयकन ऑफ इंडिया अवार्ड करनाल हरियाणा, कायस्थ श्री सम्मान बरेली आदि

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-073-5
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध